आभार प्रदर्शन

शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए जिस किसी से भी मुझे प्रेरणा, सहयोग, पथ प्रदर्शन एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है, उनके प्रति शब्द प्रसून अर्पित करना मैं अपना परम कर्त्तव्य समझती हूँ। यद्यपि कृतज्ञता ज्ञापन मात्र से मैं उनके ऋणों से मुक्त नही हो सकती क्योंकि जीवन में कुछ सार्थक कर सकने की योग्यता एवं क्षमता करने की उत्कण्ठा आकांक्षा ही मनुष्य को अन्य जीवों से पृथक करती है और इस उपलब्धि के लिए ईश कृपा ही एक मात्र जीवन का अवलम्ब है। यह ईश कृपा भी किसी गुरू के निर्देश एवं कृपा के बिना प्राप्त होना सम्भव नहीं है। सत्य ही कहा गया है कि ''गुरू देवो भवः'' शोध कार्य के लिए जिन्होंने मुझे निर्देशित, सहयोग एवं अपना अमूल्य समय दिया मैं उनका संक्षिप्त परिचय देना उचित समझती हूँ–

सर्वप्रथम मैं अपने उदार हृदय, वंदनीय, पूज्यनीय शोध पर्यवेक्षक गुरू डॉ0 अशोक कुमार तरसौलिया, रीडर, शिक्षक शिक्षा विभाग, गांधी महाविद्यालय, उरई की चिरंतन आभारी हूँ जिन्होंने मुझे वात्सल्य से अभिभूत कर मुझे अध्ययन की प्रेरणा दी, उन्हीं का आशीर्वाद व निर्देशन ही शोध कार्य का मूर्तरूप है। शोधकार्य के विषय में उन्होंने जो परामर्श दिये वे न केवल बहुमूल्य सिद्ध हुए बल्कि उन्होंने मेरी विचारशीलता व मननशीलता की गति को तीव्र बना दिया।

विशेष रूप से मैं कार्य के प्रति सजग, सहयोग की भावना प्रदान करने वाले, सम्मानीय सुविज्ञ गुरू डा0 तारेश भाटिया, रीडर मनोविज्ञान विभाग, डी.वी.सी. उरई की अत्यन्त ऋणी हूँ। जिनका मार्ग–दर्शन व सहयोग मेरे साथ रहा और अपना अमूल्य समय निकालकर मेरे लिखित शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान किया।

मैं अपने वंदनीय, परमआदरणीय प्रेरणा के स्रोत गुरू डा0 रामलखन विश्वकर्मा एंव उदार हृदया वन्दनीया गुरू डा0 शैलजा गुप्ता की विशेष आभारी हूँ।

जिनका स्नेहिल निर्देशन, आशीर्वाद मुझे सुपथ की प्रेरणा देता रहा, और समय–समय पर इस शोध कार्य को पूरा करने में मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने पूज्य गुरू श्री अशोक कुमार तिवारी 'गणित शिक्षक' की विशेष आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे हर प्रकार से उत्साहित कर कार्य सफलता की प्रेरणा प्रदान की है और मैं उनकी इस कृपा के लिए हार्दिक रूप से अनुग्रहीत हूँ।

विद्यालय से पूर्व विद्याध्ययन की सर्वप्रथम प्रेरणातो अपने परिवार से ही प्राप्त होती है और ईश्वर की कृपा से मुझकों इसका सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। मेरे पूज्य पिताजी श्री मिश्रीलाल स्वर्णकार (हास्यकवि) एवं माता जी श्रीमती शकुन्तला स्वर्णकार की मैं हमेशा ऋणी रहूंगी, जिनका आशीर्वाद, प्रेरणा व सहयोग पग–पग पर मेरे साथ रहा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं को प्राप्त करने में सफल हो संकू। मैं अपने भाई–योगेन्द्र स्वर्णकार और बहिन संगीता स्वर्णकार के प्रति हमेशा ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग दिया और समय–समय पर कार्य करवाने में पूरी मदद की।

मैं विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एंव शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ कि जिन्होंने आंकड़े एकत्रित करने तथा अन्य उपयोगी कार्यों में अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। जिससे इस शोधकार्य को पूर्ण किया।

इसके अतिरिक्त मैं अपनी सहपाठी डा0 कल्पना श्रीवास्तव व डा0 साधना अवस्थी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मेरे साथ आंकड़े एकत्रित करने में अथक प्रयास किया। समय–समय पर उत्साहित कर कार्य सफलता की प्रेरणा प्रदान की।

अन्ततः शोधकर्त्री शिक्षाविद् लेखकों जिनकी पुस्तकों के अध्ययन से मुझे अपना शोधकार्य पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हुई उनकी भी मैं चिर ऋणी रहूंगी। इसके अतिरिक्त मैं अपने स्कूल व कालेजों के समस्त गुरूजनों की आभारी हूँ जिन्होंने सदैव हमारे जीवन की बगिया के पुष्पों को पल्लवित करने के लिए जल का कार्य किया तथा

इस ज्ञानरूपी क्यारी को हरी–भरी करने के लिए हर राह उचित मार्ग प्रदर्शित किया तथा हमारे जीवन में स्वच्छ कोमल तथा शुद्ध गंगा की धारा प्रवाहित की है। इन सभी के लिए में चिरंतन ऋणी रहूंगी।

दिनांक : 29/12/2005

शोधार्थी

ममता स्वर्णकार

एम.ए., ए.एड.